अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेह्रबान, रह्म करने वाला है
तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं
जिस ने अपने बन्दे (मुहम्मद स) पर
(यह) किताब नाज़िल की, और उस
में कोई कजी न रखी। (1)
(बल्कि) ठीक सीधी (उतारी)
ताकि डर सुनाए उस की तरफ़
से सख़्त अ़ज़ाब से, और मोमिनों
को ख़ुशख़बरी दे, जो अच्छे अ़मल
करते हैं कि उन के लिए अच्छा
अजर है, (2)
वह उस में हमेशा रहेंगे। (3)
और वह उन लोगों को डराए
जिन्हों ने कहा अल्लाह ने बेटा
बना लिया है। (4)
उस का न उन्हें कोई इल्म है
और न उन के बाप दादा को था,
बड़ी है बात (जो) उन के मुँह से
निकलती है, वह नहीं कहते मगर
झूट। (5)
तो शायद आप (स) उन के पीछे
अपनी जान को हलाक करने वाले
हैं, अगर वह ईमान न लाए इस
बात पर, ग़म के मारे। (6)
जो कुछ ज़मीन में है, बेशक हम ने
उसे उस के लिए ज़ीनत बनाया है
ताकि हम उन्हें आज़माएं कि उन में
कौन है अ़मल में बेहतर। (7)
और जो कुछ इस (ज़मीन) पर है
बेशक हम उसे (नाबूद कर के) साफ़
चटयल मैदान करने वाले हैं। (8)
क्या तुम ने गुमान किया? कि
कहफ़ (ग़ार) और रक़ीम वाले
हमारी निशानियों में से अ़जीब
थे। (9)
जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली
तो उन्हों ने कहा, ऐ हमारे रब!
हमें अपनी तरफ़ से रहमत दे,
और हमारे काम में दुरुस्ती मुहैया
कर। (10)
पस हम ने पर्दा डाला उन के
कानों पर, उन्हें ग़ार में कई साल
(सुलाया)। (11)

آيَاتُهَا ١١٠ ❀ سُوْرَةُ الْكَهْفِ (١٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

रुकुआ़त 12 — (18) सूरतुल कहफ़ ग़ार — आयात 110

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ

और न रखी	किताब (क़ुरआन)	अपने बन्दे पर	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें

لَّهٗ عِوَجًا ۜ ﴿١﴾ قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ

और ख़ुशख़बरी दे	उस की तरफ़ से	सख़्त	अ़ज़ाब	ताकि डर सुनाए	ठीक सीधी	1	कोई कजी	उस में

الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۙ ﴿٢﴾

2	अच्छा अजर	कि उन के लिए	अच्छे	अ़मल करते हैं	वह जो	मोमिनों

مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ ﴿٣﴾ وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ

अल्लाह ने बना लिया है	वह जिन लोगों ने कहा	और वह डराए	3	हमेशा	उस में	वह रहेंगे

وَلَدًا ۙ ﴿٤﴾ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ كَبُرَتْ كَلِمَةً

बात	बड़ी है	उन के पाप दादा	और न	कोई इल्म	उन को उस का	नहीं	4	बेटा

تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ﴿٥﴾ فَلَعَلَّكَ

तो शायद आप	5	झूट	मगर	वह कहते हैं	नहीं	उन के मुँह (जमा)	से	निकलती है

بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ

बात	इस	वह ईमान न लाए	अगर	उन के पीछे	पर	अपनी जान	हलाक करने वाला

اَسَفًا ﴿٦﴾ اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ

कौन उन में से	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उसके लिए	ज़ीनत	ज़मीन पर	जो	हम ने बनाया	बेशक हम	6	ग़म के मारे

اَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾ وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۭ ﴿٨﴾

8	बंजर (चटयल)	साफ़ मैदान	जो उस पर	अलबत्ता करने वाले	और बेशक हम	7	अ़मल में	बेहतर

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ كَانُوْا مِنْ

से	वह थे	और रक़ीम	असहाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	कि	क्या तुम ने गुमान किया?

اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾ اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ

ऐ हमारे रब	तो उन्हों ने कहा	ग़ार	तरफ़- में	जवान (जमा)	पनाह ली	जब	9	हमारी निशानियां अ़जीब

اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

10	दुरुस्ती	हमारे काम में	हमारे लिए	और मुहैया कर	रहमत	अपनी तरफ़ से	हमें दे

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِى الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا ۙ ﴿١١﴾

11	कई साल	ग़ार में	उन के कान (जमा)	पर	पस हम ने मारा (पर्दा डाला)

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَیُّ الْحِزْبَیْنِ اَحْصٰی لِمَا لَبِثُوْۤا اَمَدًا ﴿۱۲﴾

12	मुद्दत	कितनी देर रहे	हिसाब रखा	दोनों गिरोह	कौन-किस	ताकि हम देखें	हम ने उन्हें उठाया	फिर

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّهُمْ فِتْیَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ

अपने रब पर	वह ईमान लाए	चन्द नौजवान	बेशक वह	ठीक ठीक	उनका हाल	तुझ से	बयान करते हैं	हम

وَزِدْنٰهُمْ هُدًی ﴿۱۳﴾ وَّرَبَطْنَا عَلٰی قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا

तो उन्हों ने कहा	वह खड़े हुए	जब	उन के दिल	पर	और हम ने गिरह लगादी	13	हिदायत	और हम ने और ज़ियादा दी उन्हें

رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَاۤ

अलबत्ता हम ने कही	कोई माबूद	उस के सिवा	हम पुकारेंगे	हरगिज़ न	आस्मानों और ज़मीन का परवरदिगार	हमारा रब

اِذًا شَطَطًا ﴿۱۴﴾ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً ؕ

और माबूद	उस के सिवा	उन्हों ने बना लिए	हमारी क़ौम	यह है	14	बेजा बात	उस वक़्त

لَوْ لَا یَاْتُوْنَ عَلَیْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ بَیِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی

इफ़्तिरा करे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	वाज़ेह	कोई दलील	उन पर	क्यों वह नहीं लाते

عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ﴿۱۵﴾ ؕ وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ

अल्लाह के सिवा	और जो वह पूजते हैं	तुम ने उन से किनारा कर लिया	और जब	15	झूट	अल्लाह	पर

فَاْوٗۤا اِلَی الْكَهْفِ یَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَیُهَیِّئْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	मुहैया करेगा	अपनी रहमत	से	तुम्हारा रब	फैला देगा तुम्हें	ग़ार	तरफ़-में	तो पनाह लो

مِّنْ اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿۱۶﴾ وَتَرَی الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ عَنْ

से	बच कर जाती है	वह निकलती है	जब	सूरज (धूप)	और तुम देखोगे	16	सहूलत	तुम्हारे काम	से

كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ

बाएं तरफ़	उन से कतरा जाती है	वह ढल जाती है	और जब	दाएं तरफ़	उन का ग़ार

وَهُمْ فِیْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ مَنْ یَّهْدِ اللّٰهُ

हिदायत दे अल्लाह	जो - जिसे	अल्लाह की निशानियां	से	यह	उस (ग़ार) की	खुली जगह	में	और वह

فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ یُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِیًّا مُّرْشِدًا ﴿۱۷﴾

17	सीधी राह दिखाने वाला	कोई रफ़ीक़	उस के लिए	पस तू हरगिज़ न पाएगा	वह गुमराह करे	और जो-जिस	पस वह हिदायत याफ़्ता

وَتَحْسَبُهُمْ اَیْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۚ وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْیَمِیْنِ

दाएं तरफ़	और हम बदलवाते हैं उन्हें	सोए हुए	हालांकि वह	बेदार	और तू उन्हें समझे

وَذَاتَ الشِّمَالِ ۗ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَیْهِ بِالْوَصِیْدِ ؕ لَوِ اطَّلَعْتَ

अगर तू झांकता	देहलीज़ पर	दोनों हाथ	फैलाए हुए	और उन का कुत्ता	और बाएं तरफ़

عَلَیْهِمْ لَوَلَّیْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿۱۸﴾

18	दहशत में	उन से	और तू भर जाता	भागता हुआ	उन से	तो पीठ फेरता	उन पर

फिर हम ने उन्हें उठाया ताकि हम देखें दोनों गिरोहों में से किस ने खूब याद रखा है कि वह कितनी मुद्दत (ग़ार में) रहे? (12)

हम तुझ से ठीक ठीक उन का हाल बयान करते हैं, वह चन्द नौजवान थे, वह ईमान लाए अपने रब पर, और हम ने उन्हें हिदायत और ज़ियादा दी। (13)

और हम ने उन के दिलों पर गिरह लगा दी (दिल पुख़्ता कर दिए) जब वह खड़े हुए तो उन्हों ने कहा हमारा रब परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का, हम उस के सिवाए हरगिज़ किसी को माबूद न पुकारेंगे (वरना) अलबत्ता उस वक़्त हम ने बेजा बात कही। (14)

यह है हमारी क़ौम, उस ने उस के सिवा और माबूद बना लिए, वह उन पर कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते? पस कौन है उस से बड़ा ज़ालिम जो अल्लाह पर झूट इफ़्तिरा करे। (15)

और जब तुम ने उन से और जिन को वह अल्लाह के सिवा पूजते हैं उन से किनारा कर लिया है तो ग़ार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपनी रहमत फैलादेगा, और तुम्हारे काम में तुम्हारे लिए सहूलत मुहैया करेगा। (16)

और तुम देखोगे जब धूप निकलती है, वह उन की ग़ार से दाएं तरफ़ बच कर जाती है, और जब वह ढलती है तो उन से बाएं तरफ़ को कतरा जाती है, और वह ग़ार की खुली जगह में हैं, यह अल्लाह की निशानियों में से है, जिसे हिदायत दे अल्लाह, सो वही हिदायत याफ़्ता है और जिसे वह गुमराह करे तो उस के लिए हरगिज़ कोई रफ़ीक़, सीधी राह दिखाने वाला न पाओगे। (17)

और तू उन्हें बेदार समझे हालांकि वह सोए हुए हैं और हम उन्हें दाएं तरफ़ और बाएं तरफ़ (करवट) बदलवाते हैं, और उन का कुत्ता दोनों हाथ (पंजे) फैलाए हुए है देहलीज़ पर, अगर तू उन पर झांकता तो उन से पीठ फेर कर भागता, और उन से दहशत में भर जाता। (18)

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक कहने वाला	कहा	आपस में	ताकि वह एक दूसरे से सवाल करें	हम ने उन्हें उठाया	और उसी तरह

كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ

तुम्हारा रब	उन्हों ने कहा	एक दिन का कुछ हिस्सा	या	एक दिन	हम रहे	उन्हों ने कहा	तुम कितनी देर रहे

اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ

यह	अपना रुपया दे कर	अपने में से एक	पस भेजो तुम	जितनी मुद्दत तुम रहे	खूब जानता है

اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ

खाना	तो वह तुम्हारे लिए ले आए	खाना	पाकीज़ा तर	कौन सा	पस वह देखे	शहर	तरफ़

مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

19	किसी को	तुम्हारी	और वह ख़बर न दे बैठे	और नर्मी करे	उस से

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ

तुम्हें लौटा लेंगे	या	तुम्हें संगसार कर देंगे	तुम्हारी	अगर वह ख़बर पा लेंगे	बेशक वह

فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٢٠﴾ وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا

हम ने ख़बरदार कर दिया	और उसी तरह	20	उस सूरत में कभी	और तुम हरगिज़ फ़लाह न पाओगे	अपनी मिल्लत	में

عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ

कोई शक नहीं	क़ियामत	और यह कि	सच्चा	अल्लाह का वादा	कि	ताकि वह जान लें	उन पर

فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا

बनाओ	तो उन्हों ने कहा	उन का मामला	आपस में	वह झगड़ते थे	जब	उस में

عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ؕ رَبُّهُمْ اَعْلَمُ بِهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا

वह लोग जो ग़ालिब थे	कहा	ख़ूब जानता है उन्हें	उनका रब	एक इमारत	उन पर

عَلٰٓى اَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ﴿٢١﴾ سَيَقُوْلُوْنَ

अब वह कहेंगे	21	एक मस्जिद	उन पर	हम ज़रूर बनाएंगे	अपने काम	पर

ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ

उन का कुत्ता	उन का छटा	पाँच	और वह कहेंगे	उन का कुत्ता	उन का चौथा	तीन

رَجْمًۢا بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ؕ قُلْ

कह दें आप (स)	उन का कुत्ता	और उन का आठवां	सात	और कहेंगे वह	बिन देखे	बात फैंकना

رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا قَلِيْلٌ ۬ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ

उन में	पस न झगड़ो	थोड़े	मगर सिर्फ़	उन्हें नहीं जानते हैं	उन की गिनती (तेदाद)	खूब जानता है	मेरा रब

اِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ۪ وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ﴿٢٢﴾ ع

22	किसी	उन में से	उनके (बारे में)	पूछ	और न	ज़ाहिरी (सरसरी)	बहस	सिवाए

ع ٣ ١٥

और हम ने उसी तरह उन्हें उठाया ताकि वह आपस में एक दूसरे से सवाल करें, उन में से एक कहने वाले ने कहा तुम (यहां) कितनी देर रहे? उन्हों ने कहा हम रहे एक दिन या एक दिन का कुछ हिस्सा, उन्हों ने कहा तुम्हारा रब खूब जानता है तुम कितनी मुद्दत रहे हो? पस अपने में से एक को अपना यह रुपया दे कर भेजो शहर की तरफ़, पस वह देखे कौन सा खाना पाकीज़ा तर है, तो वह उस से तुम्हारे लिए ले आए और नर्मी करे और किसी को तुम्हारी ख़बर न दे बैठे। (19)

बेशक अगर वह तुम्हारी ख़बर पालेंगे तो वह तुम्हें संगसार कर देंगे या तुम्हें लौटा लेंगे अपनी मिल्लत में, और उस सूरत में तुम हरगिज़ कभी फ़लाह न पाओगे। (20)

और उसी तरह हम ने (लोगों को) उन पर ख़बरदार किया ताकि वह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत में कोई शक नहीं, (याद करो) जब वह उन के मामले में आपस में झगड़ते थे, तो उन्हों ने कहा उन पर एक इमारत बनाओ, उन का रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उन के काम पर ग़ालिब थे उन्हों ने कहा हम ज़रूर बनाएंगे उन पर एक मस्जिद (इबादतगाह)। (21)

अब (कुछ) कहेंगे वह तीन हैं चौथा उन का कुत्ता है, और (कुछ) कहेंगे वह पाँच हैं और उन का छटा है उन का कुत्ता, बिन देखे फैंकते हैं (अटकल के तुक्के चला रहे हैं), कुछ कहेंगे वह सात हैं और आठवां उन का कुत्ता है, आप (स) कह दें मेरा रब खूब जानता है उन की तेदाद, उन्हें सिर्फ़ थोड़े जानते हैं, पस सरसरी बहस के सिवा उन के (बारे में) न झगड़ो, और न पूछो उन के बारे में उन में से किसी से। (22)

نصف القرآن باعتبار عدد الحروف بان التّاء بعد الياء من النّصف الاول واللام الثانية من النصف الاخير ١٢

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ﴿٢٣﴾ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ

चाहे	यह कि	मगर	23	कल	यह	करने वाला हूँ	कि मैं	किसी काम को	और हरगिज़ न कहना तुम

اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ

कि मुझे हिदायत दे	उम्मीद है	और कह	तू भूल जाए	जब	अपना रब	और तू याद कर	अल्लाह

رَبِّيْ لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ﴿٢٤﴾ وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ

अपना ग़ार	में	और वह रहे	24	भलाई	उस से	बहुत ज़ियादा क़रीब की	मेरा रब

ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ

कितनी मुद्दत वह ठहरे	खूब जानता है	अल्लाह	आप (स) कह दें	25	नौ (9)	और उन के ऊपर	साल	तीन सौ (300)

لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ

और क्या वह सुनता है	क्या वह देखता है	और ज़मीन	आस्मानों	ग़ैब	उसी को

مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

26	किसी को	अपने हुक्म में	और वह शरीक नहीं करता	कोई मददगार	उस के सिवा	उन के लिए नहीं

وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ

उस की बातों को	नहीं कोई बदलने वाला	आप का रब	किताब	से	आप की तरफ़	जो वहि की गई	और आप पढ़ें

وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾ وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ

साथ	अपना नफ़्स (अपना आप)	और रोके रखो	27	कोई पनाह गाह	उस के सिवा	और तुम हरगिज़ न पाओगे

الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

उस का चहरा (रज़ा)	वह चाहते हैं	और शाम	सुबह	अपना रब	वह लोग जो पुकारते हैं

وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ

दुनिया	ज़िन्दगी	आराइश	तुम तलबगार हो जाओ	उन से	तुम्हारी आँखें	न दौड़ें (न फिरें)

وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ

और है	अपनी ख़ाहिश	और पीछे पड़ गया	अपना ज़िक्र	से	उस का दिल	हम ने ग़ाफ़िल कर दिया	जो - जिस	और कहा न मानो

اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿٢٨﴾ وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۣ فَمَنْ شَاۗءَ فَلْيُؤْمِنْ

सो ईमान लाए	चाहे	पस जो	तुम्हारा रब	से	हक़	और कह दें	28	हद से बढ़ा हुआ	उस का काम

وَّمَنْ شَاۗءَ فَلْيَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا ۙ

आग	ज़ालिमों के लिए	हम ने तैयार किया	बेशक हम	सो कुफ़्र करे (न माने)	चाहे	और जो

اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۭ وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَاۗءٍ

पानी से	वह दाद रसी किए जाएंगे	वह फ़र्याद करेंगे	और अगर	उस की क़नातें	उन्हें	घेर लेंगी

كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ۭ بِئْسَ الشَّرَابُ ۭ وَسَاۗءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿٢٩﴾

29	आराम गाह	और बुरी है	बुरा है पीना (मशरूब)	मुँह (जमा)	वह भून डालेगा	पिघले हुए ताम्बे की मानिंद

और हरगिज़ किसी काम को न कहना "कि मैं कल करने वाला हूँ" (कल कर दूँगा), (23) मगर "यह कि अल्लाह चाहे" (इनशा अल्लाह) और जब तू भूल जाए तो अपने रब को याद कर और कहो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे हिदायत दे उस से ज़ियादा क़रीब की भलाई की। (24) और वह उस ग़ार में तीन सौ (300) साल रहे, और उन के ऊपर नौ (309 साल)। (25) आप (स) कह दें अल्लाह खूब जानता है वह कितनी मुद्दत ठहरे, उसी को है आस्मानों और ज़मीन का ग़ैब, क्या (खूब) वह देखता है और क्या (खूब) वह सुनता है! उन के लिए उस के सिवा कोई मददगार नहीं, वह अपने हुक्म में किसी को शरीक नहीं करता। (26) और आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ आप (स) के रब की किताब वहि की गई है, उस की बातों को कोई बदलने वाला नहीं, और तुम हरगिज़ न पाओगे उस के सिवा कोई पनाह गाह। (27) और अपने आप को उन लोगों के साथ रोके (लगाए) रखो जो अपने रब को पुकारते हैं सुबह और शाम, वह उस की रज़ा चाहते हैं, और तुम्हारी आँखें उन से न फिरें कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश के तलबगार हो जाओ, और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपने ज़िक्र से ग़ाफ़िल कर दिया, और वह अपनी ख़ाहिश के पीछे पड़ गया, और उस का काम हद से बढ़ा हुआ है। (28) और आप (स) कह दें हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, पस जो चाहे सो ईमान लाए और जो चाहे सो न माने, हम ने बेशक तैयार की है ज़ालिमों के लिए आग, उस की क़नातें उन्हें घेर लेंगी, और अगर वह फ़र्याद करेंगे तो पिघले हुए ताम्बे के मानिंद (खौलते) पानी से दाद रसी किए जाएंगे, वह (उन के) मुँह भून डालेगा, बुरा है उन का मशरूब और बुरी है (उन की) आराम गाह (जहन्नम)। (29)

اِنَّ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيۡعُ اَجۡرَ مَنۡ

जो - जिस	अजर	हम ज़ाया नहीं करेंगे	यक़ीनन हम	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक

اَحۡسَنَ عَمَلًا ۚ ﴿۳۰﴾ اُولٰٓـئِكَ لَهُمۡ جَنّٰتُ عَدۡنٍ تَجۡرِىۡ

बहती हैं	हमेशगी	बाग़ात	उन के लिए	यही लोग	30	अ़मल	अच्छा किया

مِنۡ تَحۡتِهِمُ الۡاَنۡهٰرُ يُحَلَّوۡنَ فِيۡهَا مِنۡ اَسَاوِرَ مِنۡ ذَهَبٍ

सोना	से	कंगन	से	उस में	पहनाए जाएंगे	नहरें	उन के नीचे

وَّيَلۡبَسُوۡنَ ثِيَابًا خُضۡرًا مِّنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَّكِـئِيۡنَ

तकिया लगाए हुए	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से - के	सब्ज़ रंग	कपड़े	और वह पहनेंगे

فِيۡهَا عَلَى الۡاَرَآئِكِ ؕ نِعۡمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتۡ مُرۡتَفَقًا ﴿۳۱﴾ وَاضۡرِبۡ ع ٩ ١٦

और बयान करें आप (स)	31	आराम गाह	और खूब है	बदला	अच्छा	तख़्तों (मसहरियों) पर	उस में

لَهُمۡ مَّثَلًا رَّجُلَيۡنِ جَعَلۡنَا لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَيۡنِ مِنۡ اَعۡنَابٍ

अंगूर (जमा)	से - के	दो बाग़	उन में एक के लिए	हम ने बनाए	दो आदमी	मिसाल (हाल)	उन के लिए

وَّحَفَفۡنٰهُمَا بِنَخۡلٍ وَّجَعَلۡنَا بَيۡنَهُمَا زَرۡعًا ﴿۳۲﴾ كِلۡتَا الۡجَنَّتَيۡنِ

दोनों बाग़	32	खेती	उन के दरमियान	और बना दी (रखी)	खजूरों के दरख़्त	और हम ने उन्हें घेर लिया

اٰتَتۡ اُكُلَهَا وَلَمۡ تَظۡلِمۡ مِّنۡهُ شَيۡـئًا ۙ وَّفَجَّرۡنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ۙ ﴿۳۳﴾

33	एक नहर	दोनों के दरमियान	और हम ने जारी करदी	कुछ	उस से	और कम न करते थे	अपने फल	लाए

وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ اَنَا اَكۡثَرُ

मैं ज़ियादा तर	उस से बातें करते हुए	और वह	अपने साथी से	तो वह बोला	फल	उस के लिए	और था

مِنۡكَ مَالًا وَّاَعَزُّ نَفَرًا ﴿۳۴﴾ وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ

और वह	अपना बाग़	और वह दाख़िल हुआ	34	आदमियों के लिहाज़ से	और ज़ियादा बाइज़्ज़त	माल में	तुझ से

ظَالِمٌ لِّنَفۡسِهٖ ۚ قَالَ مَاۤ اَظُنُّ اَنۡ تَبِيۡدَ هٰذِهٖۤ اَبَدًا ۙ ﴿۳۵﴾

35	कभी	यह	बरबाद होगा	कि	मैं गुमान नहीं करता	वह बोला	अपनी जान पर	ज़ुल्म कर रहा था

وَّمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّدِدۡتُّ اِلٰى رَبِّىۡ لَاَجِدَنَّ

मैं ज़रूर पाऊँगा	अपना रब	तरफ़	मैं लौटाया गया	और अगर	क़ाइम (बरपा)	क़ियामत	और मैं गुमान नहीं करता

خَيۡرًا مِّنۡهَا مُنۡقَلَبًا ﴿۳۶﴾ قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗۤ

उस से बातें कर रहा था	और वह	उस का साथी	उस से	कहा	36	लौटने की जगह	इस से	बेहतर

اَكَفَرۡتَ بِالَّذِىۡ خَلَقَكَ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ مِنۡ نُّطۡفَةٍ ثُمَّ

फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	तुझे पैदा किया	उस के साथ जिस ने	क्या तू कुफ़्र करता है

سَوّٰىكَ رَجُلًا ؕ ﴿۳۷﴾ لٰـكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىۡ وَلَاۤ اُشۡرِكُ بِرَبِّىۡۤ اَحَدًا ﴿۳۸﴾

38	किसी को	अपने रब के साथ	और मैं शरीक नहीं करता	मेरा रब	वह अल्लाह	लेकिन मैं	37	मर्द	तुझे पूरा बनाया

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यक़ीनन हम उस का अजर ज़ाया नहीं करेंगे जिस ने अच्छा अ़मल किया। (30) यही लोग हैं उन के लिए हमेशगी के बाग़ात हैं, बहती हैं उन के नीचे नहरें, उस में उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, और वह कपड़े पहनेंगे सब्ज़ बारीक रेशम के और दबीज़ रेशम के, उस में वह मसहरियों पर तकिया लगाए हुए होंगे, अच्छा बदला और खूब है आराम गाह। (31) और आप (स) उन के लिए दो आदमियों का हाल बयान करें, हम ने उन में से एक के लिए दो (2) बाग़ बनाए अंगूरों के, और हम ने उन्हें खजूरों के दरख़्तों (की बाड़) से घेर लिया, और उन के दरमियान खेती रखी। (32) दोनों बाग़ अपने फल लाए, और उस (पैदावार) में कुछ कमी न करते थे, और हम ने उन दोनों के दरमियान में एक नहर जारी कर दी। (33) और उस के लिए (बहुत) फल था तो वह अपने साथी से बोला, मैं माल में तुझ से ज़ियादा तर हूँ, और आदमियों (जत्थे) के लिहाज़ से ज़ियादा बाइज़्ज़त हूँ। (34) और वह अपने बाग़ में दाख़िल हुआ (इस हाल में कि) वह अपनी जान पर ज़ुल्म कर रहा था, वह बोला मैं गुमान नहीं करता कि यह कभी बरबाद होगा। (35) और मैं गुमान नहीं करता कि क़ियामत बरपा होने वाली है, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो मैं ज़रूर इस से बेहतर लौटने की जगह पाऊँगा। (36) उस के साथी ने उस से कहा और वह उस से बातें कर रहा था, क्या तू उस के साथ कुफ़्र करता है? जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर उस ने तुझे बनाया (पूरा) मर्द। (37) लेकिन मैं (कहता हूँ) वही अल्लाह मेरा रब है, और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करता। (38)

وَلَوْ لَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ

अल्लाह की	मगर	नहीं क़ुव्वत	जो चाहे अल्लाह	तू ने कहा	अपना बाग़	तू दाख़िल हुआ	जब	और क्यों न

اِنْ تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ﴿٣٩﴾ فَعَسٰى رَبِّيْٓ اَنْ

कि	मेरा रब	तो क़रीब	39	और औलाद में	माल में	अपने से	कम तर	मुझे	अगर तू मुझे देखता है

يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	आफ़त	उस पर	और भेजे	तेरा बाग़	से	बेहतर	मुझे दे

فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ﴿٤٠﴾ اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ

फिर तू हरगिज़ न कर सके	ख़ुश्क	उस का पानी	हो जाए	या	40	चटयल	मिट्टी का मैदान	फिर वह हो कर रह जाए

لَهٗ طَلَبًا ﴿٤١﴾ وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى

पर	अपने हाथ	वह मलने लगा	पस वह रह गया	उस के फल	और घेर लिया गया	41	तलब (तलाश)	उस को

مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ

ऐ काश	और वह कहने लगा	अपनी छतरियां	पर	गिरा हुआ	और वह	उस में	जो उस ने ख़र्च किया

لَمْ اُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ اَحَدًا ﴿٤٢﴾ وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ

उस की मदद करती वह	कोई जमाअ़त	उस के लिए	और न होती	42	किसी को	अपने रब के साथ	मैं शरीक न करता

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ﴿٤٣﴾ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ

इख़्तियार	यहां	43	बदला लेने के क़ाबिल	वह था	और न	अल्लाह के सिवा	से

ع ١٣ ١٧ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۭ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ﴿٤٤﴾ وَاضْرِبْ لَهُمْ

उन के लिए	और बयान कर दें	44	बदला देने में	और बेहतर	सवाब देने में	बेहतर	वह	अल्लाह के लिए बरहक़

مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ

आस्मान	से	हम ने उस को उतारा	जैसे पानी	दुनिया की ज़िन्दगी	मिसाल

فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ

उड़ाती है उसको	चूरा चूरा	वह फिर हो गया	ज़मीन की नबातात (सब्ज़ा)	उस से-ज़रीए	पस मिल जुल गया

الرِّيٰحُ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾ اَلْمَالُ

माल	45	बड़ी क़ुदरत रखने वाला	हर शै पर	अल्लाह	और है	हवा (जमा)

وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ

बेहतर	नेकियां	और बाक़ी रहने वाली	दुनिया की ज़िन्दगी	ज़ीनत	और बेटे

عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ﴿٤٦﴾ وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ

पहाड़	हम चलाएंगे	और जिस दिन	46	आर्ज़ू में	और बेहतर	सवाब में	तेरे रब के नज़्दीक

وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ﴿٤٧﴾

47	किसी को	उन से	फिर न छोड़ेंगे हम	और हम उन्हें जमा कर लेंगे	खुली हुई (साफ़ मैदान)	ज़मीन	और तू देखेगा

और क्यों न जब तू दाख़िल हुआ अपने बाग़ में, तू ने कहा "माशा अल्लाह" (जो अल्लाह चाहे वही होता है) कोई क़ुव्वत नहीं मगर अल्लाह की (दी हुई) अगर तू मुझे अपने से कम तर देखता है माल में और औलाद में, (39)

तो क़रीब है कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर दे और उस (तेरे बाग़) पर आफ़त भेजे आस्मान से, फिर वह मिट्टी का चटयल मैदान हो कर रह जाए। (40)

या उस का पानी ख़ुश्क हो जाए, और तू हरगिज़ न कर सके उस को तलाश। (41)

और उस के फल (अ़ज़ाब में) घेर लिए गए और उस में जो उस ने ख़र्च किया था, वह उस पर अपना हाथ मलता रह गया और वह (बाग़) अपनी छतरियों पर गिरा हुआ था और वह कहने लगा ऐ काश, मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न करता। (42)

और उस के लिए कोई जमाअ़त न हुई कि अल्लाह के सिवा उस की मदद करती, और वह बदला लेने के क़ाबिल न था। (43)

यहां इख़्तियार अल्लाह बरहक़ के लिए है, वही बेहतर है सवाब देने में, और बेहतर है बदला देने में। (44)

और आप (स) उन के लिए बयान करें दुनिया की मिसाल (वह ऐसे है) जैसे हम ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उस के ज़रीए ज़मीन का सब्ज़ा मिल जुल गया (खूब घना उगा) फिर वह चूरा चूरा हो गया कि उस को हवाएं उड़ाती हैं, और अल्लाह हर शै पर बड़ी क़ुदरत रखने वाला है। (45)

माल और बेटे दुनिया की ज़िन्दगी की ज़ीनत हैं, और बाक़ी रहने वाली नेकियां तेरे रब के नज़्दीक बेहतर हैं सवाब में, और बेहतर हैं आर्ज़ू में। (46)

और जिस दिन हम पहाड़ चलाएंगे, और तू ज़मीन को साफ़ मैदान देखेगा, और हम उन्हें जमा कर लेंगे, फिर हम उन में से किसी को न छोड़ेंगे। (47)

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें पैदा किया था	जैसे	अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए	सफ़ बस्ता	तेरा रब	पर - सामने	और वह पेश किए जाएंगे

اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ﴿٤٨﴾ وَوُضِعَ

और रखी जाएगी	48	कोई वक़्ते मौऊद	तुम्हारे लिए	कि हम ठहराएंगे	हरगिज़ न	तुम समझते थे	बल्कि (जबकि)	पहली बार

الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ

उस में	उस से जो	डरते हुए	मुजरिम (जमा)	सो तुम देखोगे	किताब

وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً

छोटी बात	यह नहीं छोड़ती	यह किताब (तहरीर)	कैसी है	हाए हमारी शामते आमाल	और वह कहेंगे

وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰىهَا ۚ وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ

सामने	जो उन्हों ने किया	और वह पालेंगे	वह उसे घेरे (क़लम बन्द किए) हुए	मगर	बड़ी बात	और न

ع ٦ ٥ ١٨

وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ﴿٤٩﴾ ع وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا

तुम सिजदा करो	फ़रिश्तों से	हम ने कहा	और जब	49	किसी पर	तुम्हारा तब	और जुल्म नहीं करेगा

لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ

से	वह (बाहर) निकल गया	जिन	से	वह था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिजदा किया	आदम (अ) को

اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ

और वह	मेरे सिवाए	दोस्त (जमा)	और उस की औलाद	सो क्या तुम उस को बनाते हो	अपने रब का हुक्म

لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾ مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ

पैदा करना	हाज़िर किया मैं ने उन्हें	नहीं	50	बदल	ज़ालिमों के लिए	बुरा है	दुश्मन	तुम्हारे लिए

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ

बनाने वाला	और मैं नहीं	उन की जानें (खुद वह)	और न पैदा करना	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ﴿٥١﴾ وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

और वह जिन्हें	मेरे शरीक (जमा)	बुलाओ	वह फ़रमाएगा	और जिस दिन	51	बाजू	गुमराह करने वाले

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	और हम बना देंगे	उन्हें	तो वह जवाब न देंगे	पस वह उन्हें पुकारेंगे	तुम ने गुमान किया

مَّوْبِقًا ﴿٥٢﴾ وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْۤا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا

गिरने वाले हैं उस में	कि वह	तो वह समझ जाएंगे	आग	मुजरिम (जमा)	और देखेंगे	52	हलाकत की जगह

ع ٧ ١٩

وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿٥٣﴾ ع وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ

कुरआन	इस	में	हम ने फेर फेर कर बयान किया	और अलबत्ता	53	कोई राह	उस से	और न वह पाएंगे

لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

54	झगड़ालू	हर शै से ज़ियादा	इन्सान	और है	हर (तरह की) मिसालें	से	लोगों के लिए

और वह तेरे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश किए जाएंगे, (आख़िर) अलबत्ता तुम हमारे सामने आ गए जैसे हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, जबकि तुम समझते थे कि हम तुम्हारे लिए हरगिज़ कोई वक़्ते मौऊद न ठहराएंगे। (48)
और रखी जाएगी किताब, जो उस में (लिखा होगा) सो तुम मुजरिमों को उस से डरते हुए देखोगे, और वह कहेंगे हाए हमारी शामते आमाल! कैसी है यह तहरीर! यह नहीं छोड़ती छोटी सी बात और न बड़ी बात मगर उसे क़लम बन्द किए हुए है, और वह पा लेंगे जो कुछ उन्हों ने किया (अपने) सामने, और तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा। (49)
और (याद करो) जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम सिजदा करो आदम (अ) को तो (उन) सब ने सिजदा किया सिवाए इब्लीस के, वह (क़ौमे) जिन से था, और वह अपने रब के हुक्म से बाहर निकल गया, सो क्या तुम उस को और उस की औलाद को मेरे सिवाए दोस्त बनाते हो? और वह तुम्हारे दुश्मन हैं, बुरा है ज़ालिमों के लिए बदल। (50)
मैं ने उन्हें न आस्मानों और ज़मीन के पैदा करने (के वक़्त) हाज़िर किया (बुलाया) और न खुद उन के पैदा करते (वक़्त), और मैं गुमराह करने वालों को (दस्त ओ) बाजू बनाने वाला नहीं हूँ। (51)
और जिस दिन वह (अल्लाह) फ़रमाएगा कि बुलाओ मेरे शरीकों को जिन्हें तुम ने (माबूद) गुमान किया था, पस वह उन्हें पुकारेंगे तो वह जवाब न देंगे, और हम उन के दरमियान हलाकत की जगह बना देंगे। (52)
और देखेंगे मुजरिम आग, तो वह समझ जाएंगे कि वह उस में गिरने वाले हैं, और वह उस से (बच निकलने की) कोई राह न पाएंगे। (53)
और हम ने अलबत्ता इस कुरआन में लोगों के लिए फेर फेर कर हर क़िस्म की मिसालें बयान की हैं, और इन्सान हर शै से ज़ियादा झगड़ालू है। (54)

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا

और वह बख़्शिश मांगें	हिदायत	जब आ गई उन के पास	वह ईमान लाएं	कि	लोग	रोका	और नहीं

رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ

आए उन के पास	या	पहलों की	रविश (मामला)	उन के पास आए	यह कि	सिवाए	अपना रब

الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿٥٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ

ख़ुशख़बरी देने वाले	मगर	रसूल (जमा)	और हम नहीं भेजते	55	सामने का	अ़ज़ाब

وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا

ताकि वह फ़ुसला दें	नाहक़ (की बातों से)	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने	और झगड़ा करते हैं	और डर सुनाने वाले

بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ﴿٥٦﴾ وَمَنْ

और कौन	56	मज़ाक़	वह डराए गए	और जो-जिस	मेरी आयात	और उन्हों ने बनाया	हक़	उस से

اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ

जो आगे भेजा	और वह भूल गया	उस से	तो उस ने मुँह फेर लिया	उस का रब	आयतों से	समझाया गया	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَدٰهُ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰي قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ

और में	वह उसे समझ सकें	कि	पर्दे	उन के दिलों	पर	बेशक हम ने डाल दिए	उस के दोनों हाथ

اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا

पाएं हिदायत	तो वह हरगिज़ न	हिदायत	तरफ़	तुम उन्हें बुलाओ	और अगर	गिरानी	उन के कान

اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ۭ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا

उस पर जो	उन का मुआख़ज़ा करे	अगर	रहमत वाला	बख़्शने वाला	और तुम्हारा रब	57	कभी भी	जब भी

كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ۭ بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا

वह हरगिज़ न पाएंगे	उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर	बल्कि	अ़ज़ाब	उन के लिए	तो वह जल्द भेज दे	उन्हों ने किया

مِنْ دُوْنِهٖ مَوْىِلًا ﴿٥٨﴾ وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا

और हम ने मुक़र्रर किया	उन्हों ने ज़ुल्म किया	जब	हम ने उन्हें हलाक कर दिया	बस्तियां	और यह (उन)	58	पनाह की जगह	उस से वरे

ع ٨ ٦ ٢٠ لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ﴿٥٩﴾ ع وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى

यहां तक कि	मैं न हटूँगा	अपने जवान (शागिर्द) से	मूसा (अ)	कहा	और जब	59	एक मुक़र्ररा वक़्त	उन की तबाही के लिए

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ

मिलने का मुक़ाम	वह दोनों पहुँचे	फिर जब	60	मुद्दते दराज़	या चलता रहूँगा	दो दर्याओं के	मिलने की जगह	मैं पहुँच जाऊँ

بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾ فَلَمَّا

फिर जब	61	सुरंग की तरह	दर्या में	अपना रास्ता	तो उस ने बना लिया	अपनी मछली	वह भूल गए	दोनों के दरमियान

جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَاۗءَنَا ۡ لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

62	तक्लीफ़	इस	अपना सफ़र	से	अलबत्ता हम ने पाई	हमारा सुब्ह का खाना	हमारे पास लाओ	अपने शागिर्द को	उस ने कहा	वह आगे चले

और लोगों को (किसी बात ने) नहीं रोका कि वह ईमान ले आएं जब कि उन के पास हिदायत आ गई और वह अपने रब से बख़्शिश मांगें, सिवाए इस के कि उन के पास पहलों की रविश आए या उन के पास आए सामने का अ़ज़ाब। (55)

और हम रसूल नहीं भेजते मगर ख़ुशख़बरी देने वाले और डर सुनाने वाले, और झगड़ा करते हैं काफ़िर नाहक़ बातों के साथ, ताकि वह उस से हक़ (बात) को फ़ुसला दें, और उन्हों ने बनाया मेरी आयतों को और जिस से वह डराए गए एक मज़ाक़। (56)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिसे उस के रब की आयतों से समझाया गया तो उस ने उस से मुँह फेर लिया, और भूल गया जो उस के दोनों हाथों ने (उस ने) आगे भेजा है, बेशक हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वह इस क़ुरआन को समझ सकें और उन के कानों में गिरानी है (बहरे हैं) और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ तो जब भी वह हरगिज़ हिदायत न पाएंगे कभी भी। (57)

और तुम्हारा रब बख़्शने वाला, रहमत वाला है। अगर उन के किए पर वह उन का मुआख़ज़ा करे तो वह जल्द भेज दे उन के लिए अ़ज़ाब, बल्कि उन के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है और वह हरगिज़ उस के वरे पनाह की जगह न पाएंगे। (58)

और उन बस्तियों को जब उन्हों ने ज़ुल्म किया हम ने हलाक कर दिया, और हम ने उन की तबाही के लिए एक वक़्त मुक़र्रर किया। (59)

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपने शागिर्द से कहा मैं हटूँगा नहीं (चलता रहूँगा) यहां तक कि पहुँच जाऊँ दो (2) दर्याओं के मिलने की जगह (संगम पर) या मैं मुद्दते दराज़ चलता रहूँगा। (60)

फिर जब वह दोनों (दर्याओं) के संगम पर पहुँचे तो वह अपनी मछली भूल गए तो उस (मछली) ने अपना रास्ता बना लिया दर्या में सुरंग की तरह। (61)

फिर जब वह आगे चले तो मूसा (अ) ने अपने शागिर्द को कहा हमारे लिए सुब्ह का खाना लाओ, अलबत्ता हम ने अपने इस सफ़र से बहुत (तक्लीफ़) थकान पाई है। (62)

قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ

मछली	भूल गया	तो बेशक मैं	पत्थर	तरफ़-पास	हम ठहरे	जब	क्या आप ने देखा?	उस ने कहा

وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ

दर्या में	अपना रास्ता	और उस ने बना लिया	मैं उस का ज़िक्र करूँ	कि	शैतान	मगर	भुलाया मुझे	और नहीं

عَجَبًا ﴿٦٣﴾ قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا

अपने निशानाते (क़दम)	पर	फिर वह दोनों लौटे	हम चाहते थे	जो	यह	उस ने कहा	63	अजीब तरह

قَصَصًا ﴿٦٤﴾ فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا

अपने पास	से	रहमत	हम ने दी उसे	हमारे बन्दे	से	एक बन्दा	फिर दोनों ने पाया	64	देखते हुए

وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ﴿٦٥﴾ قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى

पर	मैं तुम्हारे साथ चलूँ	क्या	मूसा (अ)	उस को	कहा	65	इल्म	अपने पास से	और हम ने इल्म दिया उसे

اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾ قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ

हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	उस ने कहा	66	भली राह	तुम्हें सिखाया गया है	उस से जो	तुम सिखा दो मुझे	कि

مَعِىَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

68	वाक़फ़ियत से	तू ने अहाता नहीं किया उसका	जो	उस पर	तू सब्र करेगा	और कैसे	67	सब्र	मेरे साथ

قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ﴿٦٩﴾

69	किसी बात	तुम्हारे	मैं नाफ़रमानी करूँगा	और न	सब्र करने वाला	अगर चाहा अल्लाह ने	तुम मुझे पाओगे जल्द	उस ने कहा

قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ

मैं बयान करूँ	यहां तक कि	किसी चीज़	से - के बारे में	तो मुझ से न पूछना	तुझे मेरे साथ चलना है	पस अगर	उस ने कहा

ع ٩ ١١ ٢١

لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ ع فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ۭ

उस ने सुराख़ कर दिया उस में	कश्ती में	वह दोनों सवार हुए	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	70	ज़िक्र	उस का	तुझ से

قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ﴿٧١﴾

71	भारी	एक बात	अलबत्ता तू लाया (तू ने की)	उस के सवार	कि तुम ग़र्क़ कर दो	तुम ने उस में सुराख़ कर दिया	उस ने कहा

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾ قَالَ

उस ने कहा	72	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा तू	बेशक तू	क्या मैं ने नहीं कहा	(ख़िज़्र अ) ने कहा

لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِىْ مِنْ اَمْرِىْ عُسْرًا ﴿٧٣﴾

73	मुश्किल	मेरा मामला	से	और मुझ पर न डालें	मैं भूल गया	उस पर जो	आप मेरा मुआख़ज़ा न करें

فَانْطَلَقَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ قَالَ اَقَتَلْتَ

क्या तुम ने क़त्ल कर दिया	उस ने कहा	तो उस ने उस को क़त्ल कर दिया	एक लड़का	वह मिले	जब	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले

نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ﴿٧٤﴾

74	नापसन्दीदा	एक काम	तुम आए (तुम ने किया)	अलबत्ता	जान	बग़ैर	पाक	एक जान

उस ने कहा क्या आप ने देखा? जब हम पत्थर के पास ठहरे तो बेशक मैं मछली भूल गया और मुझे नहीं भुलाया मगर शैतान ने, कि मैं (आप से) उस का ज़िक्र करूँ, और उस ने बना लिया अपना रास्ता दर्या में अजीब तरह से। (63)

मूसा (अ) ने कहा यही है (वह मुक़ाम) जो हम चाहते थे, फिर वह दोनों लौटे अपने निशानाते क़दम पर देखते हुए। (64)

फिर उन्हों ने हमारे बन्दों में से एक बन्दा (ख़िज़्र अ) को पाया, उसे हम ने अपने पास से रहमत दी, और हम ने उसे अपने पास से इल्म दिया। (65)

मूसा (अ) ने उस से कहा क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ? इस (बात) पर कि तुम मुझे सिखा दो इस भली राह में से जो तुम्हें सिखाई गई है। (66)

उस (ख़िज़्र अ) ने कहा बेशक तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (67)

और तू उस पर कैसे सब्र कर सकेगा जिस का तू ने वाक़िफ़ियत से अहाता नहीं किया (जिस से तू वाक़िफ़ नहीं)। (68)

मूसा (अ) ने कहा अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जल्द मुझे पाओगे सब्र करने वाला, और मैं तुम्हारी किसी बात की नाफ़रमानी न करूँगा। (69)

ख़िज़्र (अ) ने कहा पस अगर तुझे मेरे साथ चलना है तो मुझ से न पूछना किसी चीज़ से मुतअ़ल्लिक़, यहां तक कि मैं ख़ुद तुझ से ज़िक्र करूँ। (70)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि जब वह दोनों कश्ती में सवार हुए, उस (ख़िज़्र अ) ने उस में सुराख़ कर दिया, मूसा (अ) ने कहा तुम ने उस में सुराख़ कर दिया ताकि तुम उस के सवारों को ग़र्क़ कर दो, अलबत्ता तुम ने एक भारी (ख़तरे की) बात की है। (71)

ख़िज़्र (अ) ने कहा क्या मैं ने नहीं कहा था? कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा। (72)

मूसा (अ) ने कहा आप उस पर मेरा मुआख़ज़ा न करें जो मैं भूल गया और मेरे मामले में मुझ पर मुश्किल न डालें। (73)

फिर वह दोनों चले यहां तक कि वह एक लड़के को मिले तो उस (ख़िज़्र अ) ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा (अ) ने कहा क्या तुम ने एक पाक जान को जान (के बदले के) बग़ैर क़त्ल कर दिया, अलबत्ता तुम ने एक नापसन्दीदा काम किया। (74)

قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِیَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾

75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	बेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा

قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَیْءٍۭ بَعْدَهَا فَلَا تُصٰحِبْنِیْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ

अलबत्ता तुम पहुँच गए	तो मुझे अपने साथ न रखना	इस के बाद	किसी चीज़ से	मैं तुम से पूछूँ	उस (मूसा अ) ने कहा अगर

مِنْ لَّدُنِّیْ عُذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ٚ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَتَیَاۤ اَهْلَ قَرْیَةِ اِۨسْتَطْعَمَاۤ

दोनों ने खाना मांगा	एक गावँ वालों के पास	जब वह दोनों आए	यहां तक कि	फिर वह दोनों चले	76	उज़्र को	मेरी तरफ़ से

اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ یُّضَیِّفُوْهُمَا فَوَجَدَا فِیْهَا جِدَارًا یُّرِیْدُ

वह चाहती थी	उस में (वहां) एक दीवार	फिर उन्हों ने पाई (देखी)	वह उन की ज़ियाफ़त करें	तो उन्हों ने इन्कार कर दिया कि	उस के बाशिन्दे

اَنْ یَّنْقَضَّ فَاَقَامَهٗ ؕ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَیْهِ اَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	77	उज्रत	उस पर	ले लते	अगर तुम चाहते	उस ने कहा	तो उस ने उसे सीधा कर दिया	कि वह गिर पड़े

هٰذَا فِرَاقُ بَیْنِیْ وَبَیْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ بِتَاْوِیْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَیْهِ

उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर	अब तुम्हें बताए देता हूँ	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	जुदाई	यह

صَبْرًا ﴿٧٨﴾ اَمَّا السَّفِیْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِیْنَ یَعْمَلُوْنَ فِی الْبَحْرِ

दर्या में	वह काम करते थे	ग़रीब लोगों की	सो वह थी	कश्ती	रही	78	सब्र

فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِیْبَهَا وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ یَّاْخُذُ كُلَّ سَفِیْنَةٍ

हर कश्ती	वह पकड़ लेता	एक बादशाह	उन के आगे	और था	मैं उसे ऐबदार कर दूँ	कि	सो मैं ने चाहा

غَصْبًا ﴿٧٩﴾ وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَیْنِ فَخَشِیْنَاۤ اَنْ یُّرْهِقَهُمَا

कि उन्हें फंसादे	सो हमें अन्देशा हुआ	दोनों मोमिन	उस के माँ बाप	तो थे	लड़का	और रहा	79	ज़बरदस्ती

طُغْیَانًا وَّكُفْرًا ﴿٨٠﴾ ۚ فَاَرَدْنَاۤ اَنْ یُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَیْرًا مِّنْهُ زَكٰوةً

पाकीज़गी	उस से	बेहतर	उन का रब	कि बदला दे उन दोनों को	पस हम ने इरादा किया	80	और कुफ़्र में	सरकशी में

وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَیْنِ یَتِیْمَیْنِ

दो यतीम	दो (2) बच्चों की	सो वह थी	दीवार	और रही	81	शफ़्क़त	और ज़ियादा क़रीब

فِی الْمَدِیْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ

सो चाहा कि	नेक	उन का बाप	और था	उन दोनों के लिए	ख़ज़ाना	उस के नीचे	और था	शहर में - के

رَبُّكَ اَنْ یَّبْلُغَاۤ اَشُدَّهُمَا وَیَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ

से तुम्हारा रब	मेहरबानी	अपना ख़ज़ाना	और वह दोनों निकालें	अपनी जवानी	कि वह पहुँचें	तुम्हारा रब

ع ١٠ / ١٢ / ١ وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ اَمْرِیْ ؕ ذٰلِكَ تَاْوِیْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَیْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾ ع ط

82	सब्र	उस पर	तुम न कर सके	जो	ताबीर (हक़ीक़त)	यह	अपना हुक्म (मरज़ी)	से	और यह मैं ने नहीं किया

وَیَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِی الْقَرْنَیْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَیْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾ ط

83	कुछ हाल	उस से - का	तुम पर - सामने	अभी पढ़ता हूँ	फ़रमा दें	ज़ुलक़रनैन	से (बाबत)	और आप (स) पूछते हैं

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75)
मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअ़ल्लिक़) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलबत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़्र को। (76)
फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्हों ने उस के बाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्हों ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफ़त करने से, फिर उन्हों ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज्रत ले लते। (77)
उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें ताबीर (हक़ीक़ते हाल) बताए देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78)
रही कश्ती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) कश्ती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूँ। (79)
और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़्र में न फंसादे। (80)
बस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़्क़त में बहुत ज़ियादा क़रीब हो। (81)
और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए ख़ज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना ख़ज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हक़ीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82)
और वह आप (स) से पूछते हैं ज़ुलक़रनैन की बाबत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

اِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِى الْاَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾ فَاَتْبَعَ

सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शै	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	बेशक हम ने क़ुदरत दी

سَبَبًا ﴿٨٥﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِىْ عَيْنٍ

चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	ग़ुरूब होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान

حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۟ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّآ اَنْ

यह कि	या-चाहे	ऐ ज़ुलक़रनैन	हम ने कहा	एक क़ौम	उस के नज़दीक	और उस ने पाया	दलदल

تُعَذِّبَ وَاِمَّآ اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

जिस ने ज़ुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो	और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अ़ज़ाब	तो वह उसे अ़ज़ाब देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द

اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ۚ وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ اَمْرِنَا

अपना काम	मुतअ़ल्लिक़	उस के लिए	और अनक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अ़मल किया	ईमान लाया

يُسْرًا ﴿٨٨﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

तुलूअ़ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ़ होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	88	आसानी

عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾ كَذٰلِكَ ۭ وَقَدْ اَحَطْنَا

और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक क़ौम पर

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ

दो दीवारें (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूए ख़बर	जो कुछ उस के पास

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾ قَالُوْا

अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक क़ौम	दोनों के बीच	उस ने पाया

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاْجُوْجَ وَمَاْجُوْجَ مُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ فَهَلْ

तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	बेशक	ऐ ज़ुलक़रनैन

نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ﴿٩٤﴾ قَالَ

उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें

مَا مَكَّنِّىْ فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْنُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	कुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर क़ुदरत दी मुझे

رَدْمًا ﴿٩٥﴾ اٰتُوْنِىْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ۭ حَتّٰٓى اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़

انْفُخُوْا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِىْٓ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ﴿٩٦﴾

96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	यहां तक कि	धौंको

बेशक हम ने उस को ज़मीन में क़ुदरत दी और हम ने उसे हर शै का सामान दिया था। (84)
सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)
यहां तक कि वह सूरज के ग़ुरूब होने के मुक़ाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़्दीक उस ने एक क़ौम पाई, हम ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86)
उस ने कहा, अच्छा! जिस ने ज़ुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अ़ज़ाब देगा। (87)
और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अ़मल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अ़नक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)
फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)
यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ़ होने के मुक़ाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ़ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)
यह है (हक़ीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-(इल्म) में है। (91)
फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)
याहं तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक क़ौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)
अन्हों ने कहा ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी हैं तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)
उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने क़ुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वत (बाज़ू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)
मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाडों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धोंको, यहां तक कि जब (धोंक कर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

فَمَا اسْطَاعُوْٓا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ

उस ने कहा	97	नक़ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे	

هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ

और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह

وَعْدُ رَبِّيْ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ

बाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के बाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा

وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूंका जाएगा सूर

عَرْضَا ﴿١٠٠﴾ الَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا

और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थीं	वह जो कि	100	बिलकुल सामने

ع ١١ ١٩ ٢ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ يَّتَّخِذُوْا

कि वह बना लेंगे	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते

عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ اَوْلِيَآءَ ۭ اِنَّآ اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ﴿١٠٢﴾

102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	बेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ

उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएं	क्या	फ़रमा दें

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहें हैं	कि वह	ख़याल करते हैं	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ

पस हम क़ाइम न करेंगे	उन के अ़मल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया

لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾ ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا

उन्हों ने कुफ़्र किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	क़ियामत के दिन	उन के लिए

وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	बेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا

उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के बाग़ात	उन के लिए	हैं	और उन्हों ने नेक अ़मल किए

لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ

मेरा रब	बातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फ़रमा दें	108	जगह बदलना	वहां से	वह न चाहेंगे

لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएं	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर

फिर वह (याजूज माजूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़ब लगा सकेंगे। (97)
उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़र्ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98)
और हम छोड़ देंगे उन के बाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99)
और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100)
और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(ग़फ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101)
जिन लोगों ने कुफ़्र किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। बेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102)
फ़रमा दें क्या हम तुम्हें बतलाएं आमाल के लिहाज़ से बदतरीन घाटे में (कौन हैं)! (103)
वह लोग जिन की बरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह ख़याल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104)
यही लोग हैं जन्हों ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अ़मल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न क़ाइम न करेंगे (उन के अ़मल बे वज़न होंगे)। (105)
यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्हों ने कुफ़्र किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हँसी मज़ाक़ ठहराया। (106)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बाग़ात। (107)
उन में हमेशा रहेंगे, वह वहां से जगह बदलना न चाहेंगे। (108)
फ़रमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएं। (109)

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰـهُكُمْ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ

हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फ़क़त	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फ़रमा दें

يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾ ١٢ ع ٣

110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अ़मल	तो उसे चाहिए कि वह अ़मल करे	अपना रब	मुलाक़ात	उम्मीद रखता है

آيَاتُهَا ٩٨ ❀ سُوْرَةُ مَرْيَمَ (١٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआ़त 6 (19) सूरह मरयम आयात 98

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ

अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़करिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़्किरा	1	काफ़ हा या ऐन साद

نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ

सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	बेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना

شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾ وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ

अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल

مِنْ وَّرَآءِيْ وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾ يَّرِثُنِيْ

मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बांझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद

وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿٦﴾ يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ

तुझे बशारत देते हैं	बेशक हम	ऐ ज़करिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याक़ूब (अ)	से-का	और वारिस हो

بِغُلٰمِ ِۨاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ اَنّٰى

कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़ब्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का

يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ

बुढ़ापा	से-की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बांझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह

عِتِيًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ

तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फ़रमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद

مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْـًٔا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ۭ قَالَ

फ़रमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़ब्ल	इस से

اٰيَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ

अपनी क़ौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी

مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿١١﴾

11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ़	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अ़मल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1)
यह तज़्किरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़करिया (अ) पर। (2)
(याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! बेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद बालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4)
और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी बीवी बांझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5)
वह वारिस हो मेरा और औलादे याक़ूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6)
(इरशाद हुआ) ऐ ज़करिया (अ)! बेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़ब्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7)
उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी बीवी बांझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8)
उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अम्र) मुझ पर आसान है, और इस से क़ब्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़र्रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10)
फिर वह मेहराबे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)